

>

Title: Need to divert the Amaravati-Narkhed rail line passing near the ancient Well 'Jagtik Manvata' worshipped by the followers of Mahanubhav Panth in Maharashtra.

**श्री दत्ता मेघे (वधी):** मैं सरकार का ध्यान मेरे चुनाव क्षेत्र के महानुभाव पंथ के आंदोलन की तरफ दिलाना चाहता हूँ। जैसाकि आप जानते हैं कि महाराष्ट्र संतों की भूमि रही है। 12वीं सदी में श्री चक्रधर खामी ने महानुभाव पंथ की रथापना की थी। यह पंथ सर्व धर्म समाज में विचास रखता है और जात-पात के घोर विशेषी है। इसी पंथ के श्री गोविंद प्रभु ने 8वीं सदी में दलित समाज के लिए एक पानी के कुएं का निर्माण किया था जिसे मातंग विठ्ठीर नाम से जाना जाता है। आज इसे जागतिक मानवता रमारक नाम दिया गया है। यह कुंआ महानुभाव पंथ के लिए ऐतिहासिक धरोहर है तथा सामाजिक जागृति का प्रतीक है अब यही कुंआ अपने अरितत्व की लड़ाई लड़ रहा है। इसका मुख्य कारण है कि इस कुए के 5 फीट की दूरी से गुजर रही अमरावती-नारखेड रेल लाइन। महानुभाव पंथ के लोगों का मानना है कि जब भी यह रेल इन पटरियों से गुजरती है तब उसके कंपन से यह कुंआ प्रभावित होता है और समय के साथ यह बाट भी हो सकता है। इसी कारण पिछले 12 वर्षों से महानुभाव पंथ के अनुयाई अपनी लड़ाई लड़ रहे हैं।

माननीय पूर्व रेल मंत्री जी ने आचार्यानन दिया था कि रेल की पटरी और कुए में उचित दूरी रखी जाएगी, किन्तु ऐसा नहीं हुआ और रेल लाइन शिर्फ 5 फीट की दूरी पर डाल दी गई। मेरा सरकार से यही निवेदन है कि इस रेल लाइन को कुए से 15 मीटर दूरी पर डाला जाय और इस मानवता के रमारक को नष्ट होने से बचाया जाए।